बीवियों के हुक़ूक़ की अदाएगी और उन से हुस्ने सुलूक पर उभारने वाली फ़िक्र अंगेज़ तहरीर

Shohar Ko Kaisa Hona Chahiye ? (Hindi)

शोहर को कैसा होना चाहिये ?

बीवी के हुक़ूक़ की अहम्मिय्यत	05
बीवी से हुस्ने सुलूक के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रामीन	07
बद अख़्लाक़ बीवी और साबिर शोहर	12
शोहर पर औरत के हुक़ूक़	18
निज़ामे फ़ितरत बदलने का अन्जाम	21
अगर इख़्तिलाफ़ बढ़ जाए तो क्या करे ?	35
शादी शुदा इस्लामी भाइयों के लिये 19 म-दनी फूल	39

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा
(दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

शोहर को कैसा होना चाहिये ?

येह रिसाला (**शोहर को कैसा होना चाहिये ?**)

दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए रसाइले दा'वते इस्लामी)" ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9327776311 • E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

शोहर को कैसा होना चाहिये ?(1)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो, तुम्हारा दुरूद पढ़ना क़ियामत के रोज़ तुम्हारे लिये नूर होगा ।(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शोहर पर बीवी के एह़सानात

एक शख़्स अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की बारगाह में अपनी बीवी की शिकायत ले कर ह़ाज़िर हुवा । जब दरवाज़े पर पहुंचा तो उन की ज़ौजा ह़ज़रते

1... मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ज़रत मौलाना ह़ाजी अबू ह़ामिद मुह़म्मद इ़मरान अ़त्तारी مُدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي ने येह बयान 21 रबीउ़स्सानी 1432 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 26 मार्च 2011 ईसवी बरोज़ हफ़्ता आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में फ़रमाया । यकुम रबीउ़स्सानी 1428 हिजरी ब मुताबिक़ 19 एप्रिल 2007 ईसवी को फ़ैज़ाने मदीना में किया गया एक और बयान "घर का अफ़्सर" इसी में ज़म कर के ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के बा'द 3 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 26 नवम्बर 2014 ईसवी को तह़रीरी सूरत में पेश किया जा रहा है। (शो'बए रसाइले दा'वते इस्लामी **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

2... مسند الفردوس، ۳/۴۱۷، حدیث: ۳۱۴۸

www.dawateislami.net

उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की (गुस्से की ह़ालत में) बुलन्द आवाज़ से गुफ़्त-गू करने की आवाज़ सुनाई दी। जब उस शख़्स ने येह माजरा देखा तो येह कहते हुए वापस लौट गया कि मैं अपनी बीवी की शिकायत करने आया था लेकिन यहां तो ख़ुद अमीरुल मुअमिनीन भी इसी मस्अले से दो चार हैं। बा'द में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स को बुलवा कर आने की वज्ह पूछी। उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं तो आप की बारगाह में अपनी बीवी की शिकायत ले कर आया था मगर जब दरवाज़े पर आप की ज़ौजए मोह़-त-रमा की गुफ़्त-गू सुनी तो मैं वापस लौट गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मेरी बीवी के मुझ पर चन्द हुक़ूक़ हैं जिन की बिना पर मैं उस से दर गुज़र करता हूं।

❀ वोह मुझे जहन्नम की आग से बचाने का ज़रीआ़ है, उस की वज्ह से मेरा दिल ह़राम की ख़्वाहिश से बचा रहता है। ❀ जब मैं घर से बाहर होता हूं तो वोह मेरे माल की ह़िफ़ाज़त करती है। ❀ मेरे कपड़े धोती है। ❀ मेरे बच्चे की परवरिश करती है। ❀ मेरे लिये खाना पकाती है।

येह सुन कर वोह शख़्स बे साख़्ता बोल उठा कि येह तमाम फ़वाइद तो मुझे भी अपनी बीवी से ह़ासिल होते हैं, मगर अफ़्सोस ! मैं ने उस की इन ख़िदमात और एह़सानात को मद्दे नज़र रखते हुए कभी उस की कोताहियों से दर गुज़र नहीं किया, आज के बा'द मैं भी दर गुज़र से काम लूंगा।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मर्दों और

1... تنبیہ الغافلین، باب حق المراۃ علی الزوج، ص ۲۸۰ ملخصاً

www.dawateislami.net

औ़रतों को जिन्सी बे राह-रवी और वस्वसए शैत़ानी से बचाने नीज़ नस्ले इन्सानी की बक़ा व बढ़ोतरी और क़ल्बी सुकून की फ़राहमी के लिये उन्हें जिस ख़ूब सूरत रिश्ते की लड़ी में पिरोया है वोह रिश्तए इज़्दिवाज कहलाता है । येह रिश्ता जितना अहम है उतना ही नाज़ुक भी है क्यूं कि एक दूसरे की ख़िलाफ़े मिज़ाज बातें बरदाश्त न करने, दर गुज़र से काम न लेने और एक दूसरे की अच्छाइयों को नज़र अन्दाज़ कर के सिर्फ़ कमज़ोरियों पर नज़र रखने की आ़दत ज़िन्दगी में ज़ह्र घोल देती है जिस के नतीजे में घर जंग का मैदान बन जाता है जब कि बाहमी तआ़वुन, ख़ुलूस, चाहत, दर गुज़र और तह़म्मुल मिज़ाजी ज़िन्दगी में ख़ुशियों के रंग बिखेर देते हैं । बयान कर्दा वाक़िए़ में ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी गुफ़्तार और अपने अ़-मली किरदार के ज़रीए़ बीवी की शिकायत ले कर आने वाले शख़्स पर येह बात वाज़ेह़ कर दी कि एक शोहर को कैसा होना चाहिये। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स को जो म-दनी फूल अ़त़ा फ़रमाए उन से येही दर्स मिलता है कि शोहर को अ़फ़्वो दर गुज़र, बुर्द-बारी, तह़म्मुल मिज़ाजी और वसीअ़ ज़र्फ़ी जैसी ख़ूबियों का पैकर होना चाहिये । वाक़ेई़ अगर शोहर अपनी बीवी की अच्छाइयों और उस के एह़सानात पर नज़र रखे और मा'मूली ग़-लतियों पर उस से दर गुज़र करे तो कोई वज्ह नहीं है कि उस का घर ख़ुशियों का गहवारा न बन सके। मगर अफ़्सोस ! आज कल मियां बीवी के दरमियान ना चाक़ियों और लड़ाई झगड़ों का मरज़ तक़रीबन हर घर में सरायत कर चुका है जिस के सबब घर घर मैदाने जंग बन चुका है। दर अस्ल हम में

www.dawateislami.net

से हर एक येह चाहता है कि मेरे हुक़ूक़ पूरे किये जाएं और येह भूल जाता है कि दूसरों के भी कुछ हुक़ूक़ हैं जिन्हें अदा करना मुझ पर लाज़िम है। बस यहीं से ना इत्तिफ़ाक़ी की आग शो'लाज़न होती है जो बढ़ते बढ़ते लड़ाई झगड़े का रूप धार कर क़ल्बी चैन व सुकून को जला कर राख कर देती है। अगर मियां बीवी में से हर एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करे और अपने हुक़ूक़ के मुआ़-मले में नरमी से काम ले तो घर अम्नो सुकून का गहवारा बन जाए।

घर की ख़ुशहाली में शोहर का किरदार

घर को अम्न और ख़ुशियों का गहवारा बनाने में शोहर का किरदार बहुत ही अहम है। अगर वोह अपनी ज़िम्मादारियां अच्छे त़रीक़े से नहीं निभाएगा और बीवी के हुक़ूक़ पूरे नहीं करेगा तो उस के घर में ख़ुशियों के फूल कैसे खिलेंगे ? **अल्लाहु** रब्बुल आ़-लमीन جَلَّ جَلَالُهٗ ने बीवियों के हुक़ूक़ से मु-तअ़ल्लिक़ क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इर्शाद फ़रमाया :

وَ لَهُنَّ مِثْلُ الَّذِیْ عَلَیْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ (پ۲، البقرۃ:۲۲۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और औ़रतों का भी ह़क़ ऐसा ही है जैसा इन पर है शर-अ़ के मुवाफ़िक़।

या'नी जिस त़रह़ औ़रतों पर शोहरों के हुक़ूक़ की अदा वाजिब है इसी त़रह़ शोहरों पर औ़रतों के हुक़ूक़ की रिआ़यत लाज़िम है।[1] इमाम अबू **अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद बिन अबू बक्र क़ुरतुबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं :

1... ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 2, अल ब-क़रह, तह़्तल आयह : 228

www.dawateislami.net

हुक़ूक़े ज़ौजिय्यत में से औ़रतों के हुक़ूक़ मर्दों पर उसी त़रह़ वाजिब हैं जिस त़रह़ मर्दों के हुक़ूक़ औ़रतों पर वाजिब हैं इसी लिये ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : बिला शुबा मैं अपनी बीवी के लिये ज़ीनत इख़्तियार करता हूं जिस त़रह़ वोह मेरे लिये बनाव सिंघार करती है और मुझे येह बात पसन्द है कि मैं वोह तमाम हुक़ूक़ अच्छी त़रह़ ह़ासिल करूं जो मेरे उस पर हैं और वोह भी अपने हुक़ूक़ ह़ासिल करे जो उस के मुझ पर हैं। क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ﴿وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِیْ عَلَیْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ﴾ (और औ़रतों का भी ह़क़ ऐसा ही है जैसा उन पर है शर-अ़ के मुवाफ़िक़) और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही से येह भी मरवी है कि बीवियों के साथ अच्छी सोह़बत और बेहतरीन सुलूक ख़ावन्दों पर इसी त़रह़ लाज़िम है जिस त़रह़ बीवियों पर हर उस (जाइज़) काम में ख़ावन्दों की इत़ाअ़त वाजिब है जिस का वोह उन्हें हुक्म दें।[1]

बीवी के हुक़ूक़ की अहम्मिय्यत

बहर ह़ाल शर-ई और अख़्लाक़ी हर लिह़ाज़ से बीवियों के हुक़ूक़ भी बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत के ह़ामिल हैं और शोहर को उन का ख़याल रखना चाहिये इ़लावा अज़ीं बीवी के जाइज़ मुत़ा-लबात को पूरा करने और जाइज़ ख़्वाहिशात पर पूरा उतरने की भी ह़त्तल मक़्दूर कोशिश करनी चाहिये। जिस त़रह़ शोहर येह चाहता है कि उस की बीवी उस के लिये बन संवर कर रहे इसी त़रह़ उसे भी बीवी की फ़ित़री चाहत को मद्दे नज़र रखते हुए उस

1... تفسیر قرطبی، پ۲، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۲۸، ۲/۹۶

www.dawateislami.net

की दिलजूई के लिये लिबास वग़ैरा की सफ़ाई सुथराई की त़रफ़ ख़ास तवज्जोह देनी चाहिये ख़्वाह वोह ज़बान से इस बात का इज़्हार करे या न करे।

सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद है कि तुम अपने कपड़ों को धोओ और अपने बालों की इस्लाह़ करो और मिस्वाक कर के ज़ीनत और पाकी ह़ासिल करो क्यूं कि बनी इसराईल इन चीज़ों का एहतिमाम नहीं करते थे इसी लिये उन की औ़रतों ने बदकारी की।[1]

प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बिखरे हुए बालों वाले शख़्स को देखा तो फ़रमाया : क्या इस को कोई ऐसी चीज़ (तेल कंघी) नहीं मिलती जिस से अपने बालों को संवार ले। एक और शख़्स को देखा जिस ने मैले कपड़े पहने हुए थे फ़रमाया : क्या इसे पानी नहीं मिलता जिस से अपने कपड़ों को धो लिया करे ?[2]

नज़ाफ़त का ख़ुसूसी एहतिमाम

त़हारत और सफ़ाई के ह़वाले से ख़ुद सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का त़र्ज़े अ़मल भी बे मिसाल और क़ाबिले तक़्लीद है। ह़ज़रते सय्यिदुना शुरैह़ बिन हानी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से दरयाफ़्त किया कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब काशानए अक़्दस में दाख़िल

1... جامع صغیر، ص۷۸، حدیث: ۱۲۱۸

2... ابوداود، کتاب اللباس، باب فی غسل الثوب... الخ، ۴/۷۲، حدیث: ۴۰۶۲

www.dawateislami.net

होते तो सब से पहले क्या काम करते थे ? फ़रमाया : आप सब से पहले मिस्वाक किया करते थे ।(1)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अपने सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कभी भी मैली कुचैली हालत में नहीं देखा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक दिन छोड़ कर दूसरे दिन सर में तेल लगाना पसन्द फ़रमाते थे नीज़ फ़रमाते कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैले कुचैले बिखरे हुए बाल वाले शख़्स को ना पसन्द फ़रमाता है ।(2)

मा'लूम हुवा कि शोहर को तहारत और सफ़ाई सुथराई का बहुत ज़ियादा एहतिमाम करना चाहिये और हत्तल इम्कान अपनी बीवी की तवक़्क़ुआ़त पर पूरा उतरने और उस से हुस्ने सुलूक रवा रखने की कोशिश करनी चाहिये ताकि ज़िन्दगी की गाड़ी शाहराहे ह़यात पर काम्याबी से गामज़न रहे । आइये बीवियों के ह़क़ में शोहरों को नसीह़त के म-दनी फूलों पर मुश्तमिल 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा मुला-ह़ज़ा कीजिये :

बीवी से हुस्ने सुलूक के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रामीने मुस्त़फ़ा

1. "خَیْرُکُمْ خَیْرُکُمْ لِاَھْلِہٖ وَاَنَا خَیْرُکُمْ لِاَھْلِیْ" तुम में सब से बेहतर वोह शख़्स है जो अपनी बीवी के ह़क़ में बेहतर हो और मैं अपनी बीवी के ह़क़ में तुम सब से बेहतर हूं ।(3)

1...مسلم، کتاب الطھارۃ، باب السواک، ص ۱۵۲، حدیث: ۲۵۳

2...شعب الایمان، باب فی الملابس والزی...الخ، ۵/۱۶۸، حدیث: ۶۲۲۶

3...ابن ماجہ، ابواب النکاح، باب حسن معاشرۃ النساء، ۲/۴۷۸، حدیث: ۱۹۷۷

www.dawateislami.net

2. “لَا يَفْرَكْ مُؤْمِنٌ مُؤْمِنَةً اِنْ كَرِهَ مِنْهَا خُلُقًا رَضِيَ مِنْهَا اٰخَرَ” कोई मुसलमान मर्द (शोहर) किसी मुसलमान औ़रत (बीवी) से नफ़रत न करे अगर उस की एक आ़दत ना पसन्द है तो दूसरी पसन्द होगी।(1)

3. तुम में से कोई शख़्स अपनी औ़रत को न मारे जैसे ग़ुलाम को मारता है फिर दिन के आख़िर में उस से सोहबत करेगा।(2)

4. औ़रतों के बारे में भलाई की वसिय्यत क़बूल करो। वोह पस्ली से पैदा की गई हैं और पस्लियों में सब से ज़ियादा टेढ़ी ऊपर वाली पस्ली है अगर तुम उसे सीधा करने चले तो तोड़ दोगे और अगर उसे छोड़ दो तो वोह टेढ़ी ही रहेगी पस तुम औ़रतों के बारे में भलाई की वसिय्यत क़बूल करो।(3)

5. औ़रत पस्ली से पैदा की गई है, वोह तुम्हारे लिये कभी सीधी नहीं हो सकती अगर तुम उस से फ़ाएदा उठाना चाहते हो तो उस के टेढ़े पन के बा वुजूद उस से फ़ाएदा उठा लो और अगर सीधा करना चाहोगे तो उसे तोड़ दोगे और इस का तोड़ना त़लाक़ है।(4)

बे ऐ़ब बीवी मिलना ना मुम्किन है

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ह़दीसे पाक नम्बर 2 के तह़त लिखते हैं : سُبْحٰنَ الله कैसी नफ़ीस ता'लीम ! मक़्सद येह है कि बे ऐ़ब बीवी मिलना ना मुम्किन है, लिहाज़ा अगर बीवी में दो एक बुराइयां भी हों तो उसे बरदाश्त करो कि कुछ

1...مسلم، کتاب الرضاع، باب الوصیۃ بالنساء، ص۷۷۵، حدیث:۱۴۶۹
2...بخاری، کتاب النکاح، باب مایکرہ من ضرب النساء، ۳/۴۶۵، حدیث: ۵۲۰۴
3...بخاری، کتاب النکاح، باب الوصاۃ بالنساء، ۳/۴۵۷، حدیث:۵۱۸۶
4...مسلم، کتاب الرضاع، باب الوصیۃ بالنساء، ص۷۷۵، حدیث: ۱۴۶۸

www.dawateislami.net

ख़ूबियां भी पाओगे। यहां (साहिबे) मिरक़ात ने फ़रमाया : जो बे ऐब साथी की तलाश में रहेगा वोह दुन्या में अकेला ही रह जाएगा, हम ख़ुद हज़ारहा बुराइयों का सर-चश्मा हैं, हर दोस्त अ़ज़ीज़ की बुराइयों से दर गुज़र करो, अच्छाइयों पर नज़र रखो, हां ! इस्लाह़ की कोशिश करो, बे ऐब तो **रसूलुल्लाह** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हैं।[1]

लम्ह़ए फ़िक्रिय्या

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हर शख़्स अपने इर्द गिर्द के माह़ोल पर नज़र डाले और ग़ौर करे तो इस ह़क़ीक़त से इन्कार नहीं कर सकता कि ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ मराह़िल में क़दम क़दम पर उसे जिस जिस चीज़ की ज़रूरत पड़ती या जिस जिस फ़र्द से वासित़ा पड़ता है वोह तमाम की तमाम चीज़ें या सारे के सारे अफ़राद उस के मिज़ाज पर पूरा नहीं उतरते बल्कि येह कहना बे जा नहीं होगा कि अक्सर मिज़ाज के ख़िलाफ़ ही होते हैं, मुल्क हो या शह्र, मह़ल्ला हो या बाज़ार, ऑफ़िस हो या घर, हमसाए हों या रिश्तेदार न जाने किन किन से वोह बेज़ार और कौन कौन ख़ुद इस से बेज़ार होता है मगर इस के बा वुजूद मुरव्वत, मजबूरी या ह़िक्मते अ़-मली के बाइस समझौते और बरदाश्त से काम लेते हुए एक दूसरे से रवाबित़ बर क़रार रखते हैं और तअ़ल्लुक़ात की दीवार में दराड़ नहीं आने देते बिल्कुल इसी त़रह़ अश्या का मुआ़-मला है कि खाने पीने से ले कर इस्ति'माल करने तक की न जाने कितनी चीज़ें ऐसी हैं जो हर लिह़ाज़ से आप की सोच,

1... मिरआतुल मनाजीह़, 5/87

www.dawateislami.net

ख़्वाहिश और मे'यार के ऐ़न मुत़ाबिक़ नहीं होतीं लेकिन वोह आप की ज़रूरत हैं इस लिये आप किसी सूरत उन्हें छोड़ने के लिये तय्यार नहीं होते। ज़रा सोचिये ! जब आप दुन्या की कई चीज़ों को बे शुमार उ़यूब व नक़ाइस के बा वुजूद अपनाते हैं तो फिर येह दोहरा मे'यार उस हस्ती के लिये क्यूं जो आप की रफ़ीक़ए ह़यात, ज़िन्दगी की अहम ज़रूरत और आप की तमाम तर ज़रूरिय्यात का ख़याल रखने वाली है ? क्या इस लिये कि आप उस के ह़ाकिम व अफ़्सर हैं जिस त़रह़ चाहें उस के साथ सुलूक करें ? क्या सिर्फ़ आप ही उस के ह़ाकिम हैं कोई आप का ह़ाकिम नहीं ? क्या सिर्फ़ बीवी ही शोहर को जवाब देह है शोहर किसी को जवाब देह नहीं ? याद रखिये ! अगर उस पर आप का हुक्म चलता है तो आप पर भी अह़-कमुल ह़ाकिमीन جَلَّ جَلَالُہٗ का हुक्म चलता है, अगर आज घर की चार दीवारी में बात बात पर ना जाइज़ त़ौर पर उसे ज़लील करेंगे तो कहीं ऐसा न हो कि कल क़ियामत के दिन मह़शर के खुले मैदान में सब के सामने आप को भी ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना करना पड़े। और फिर येह भी तो सोचिये कि जब वोह आप की कई ख़िलाफ़े मिज़ाज बातों और आ़दतों को ख़ामोशी से सह लेती है तो क्या आप उस की चन्द आ़दतों पर सब्र नहीं कर सकते...? क्या आप उस की छोटी छोटी ख़त़ाओं पर उसे मुआ़फ़ नहीं कर सकते...? क्या आप उस की बे शुमार ख़िदमतों का सिला अ़फ़्वो दर गुज़र की सूरत में नहीं दे सकते...? क्या ख़बर येही मुआ़फ़ी कल बरोज़े क़ियामत आप के गुनाहों की मुआ़फ़ी का सबब बन जाए। आइये इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये :

www.dawateislami.net

बीवी की ख़ता मुआफ़ करने का इन्आम

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 472 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बयानाते अ़त्तारिय्या" ह़िस्सए दुवुम के सफ़ह़ा 164 पर है : एक आदमी की बीवी ने खाने में नमक ज़ियादा डाल दिया। उसे गुस्सा तो बहुत आया मगर येह सोचते हुए वोह गुस्से को पी गया कि मैं भी तो ख़ताएं करता रहता हूं अगर आज मैं ने बीवी की ख़ता पर सख़्ती से गिरिफ़्त की तो कहीं ऐसा न हो कि कल बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी मेरी ख़ताओं पर गिरिफ़्त फ़रमा ले। चुनान्चे उस ने दिल ही दिल में अपनी ज़ौजा की ख़ता मुआफ़ कर दी। इन्तिक़ाल के बा'द उस को किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया ? उस ने जवाब दिया कि गुनाहों की कसरत के सबब अ़ज़ाब होने ही वाला था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : मेरी बन्दी ने सालन में नमक ज़ियादा डाल दिया था और तुम ने उस की ख़ता मुआफ़ कर दी थी, जाओ मैं भी उस के सिले में तुम को आज मुआफ़ करता हूं।

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! देखा आप ने कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत किस क़दर वसीअ़ है कि एक ऐसा शख़्स जो कस्रते इस्यां के सबब गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होने ही वाला था उस के तमाम क़ुसूर सिर्फ़ इस लिये मुआफ़ कर दिये गए कि उस ने अपनी ज़ौजा का एक छोटा सा क़ुसूर मुआफ़ कर दिया था, अगर हम में से हर शख़्स अपनी ज़ौजा की ग़-लतियों और बद अख़्लाक़ियों पर सब्र करने लगे तो न सिर्फ़ घर में चाहत व अम्न और बाहमी इत्तिफ़ाक़ की फ़ज़ा

www.dawateislami.net

क़ाइम हो जाएगी बल्कि नामए आ'माल में भी नेकियों का अम्बार लग जाएगा।

सब्रे अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام की मिस्ल सवाब

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने अपनी बीवी के बुरे अख़्लाक़ पर सब्र किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के मुसीबत पर सब्र करने की मिस्ल अज्र अ़ता फ़रमाएगा और अगर औ़रत अपने शोहर के बुरे अख़्लाक़ पर सब्र करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे फ़िरऔ़न की बीवी आसिया के सवाब की मिस्ल अज्र अ़ता फ़रमाएगा।[1]

बद अख़्लाक़ बीवी और साबिर शोहर

मन्क़ूल है कि एक मर्तबा शैख़ अबुल ह़सन ख़िरक़ानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي की विलायत का शोहरा सुन कर मश्हूर फ़ल्सफ़ी बू अ़ली सीना आप से मुलाक़ात करने के लिये ख़िरक़ान पहुंचा। जब आप के घर जा कर आप की बीवी से पूछा कि शैख़ कहां हैं ? तो अन्दर से जवाब आया कि तुम एक ज़िन्दीक़ (बे दीन) और झूटे शख़्स को शैख़ कहते हो ! मुझे नहीं मा'लूम कि शैख़ कहां हैं अलबत्ता मेरा शोहर जंगल से लकड़ियां लाने गया है। येह सुन कर बू अ़ली सीना को त़रह़ त़रह़ के ख़यालात आने लगे कि जब आप की बीवी ही इस क़िस्म की बातें करती है तो न मा'लूम आप का क्या मर्तबा है। अगर्चे मैं ने बहुत ता'रीफ़ सुनी है मगर ऐसा

1... کتاب الکبائر، الکبیرۃ السابعۃ والاربعون، ص۲۰۶

www.dawateislami.net

मा'लूम होता है कि आप एक मा'मूली इन्सान हैं। फिर जब वोह आप को तलाश करते हुए जंगल की त़रफ़ रवाना हुवा तो देखा कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه शेर की कमर पर लकड़ियां लादे तशरीफ़ ला रहे हैं। येह मन्ज़र देख कर बू अ़ली सीना बहुत ह़ैरान हुवा और क़दम बोस हो कर अ़र्ज़ करने लगा : हुज़ूर ! **अल्लाह** तआ़ला ने तो आप को ऐसा बुलन्द मक़ाम अ़त़ा फ़रमाया है लेकिन आप की बीवी आप के मु-तअ़ल्लिक़ बहुत बुरी बातें कहती है आख़िर इस की क्या वज्ह है ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया कि अगर मैं ऐसी बीवी का बोझ बरदाश्त न करता तो फिर येह शेर मेरा बोझ क्यूंकर उठाता।[1] (या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये बीवी की ज़बान दराज़ी पर सब्र करता हूं तो **अल्लाह** तआ़ला ने जंगल के शेर को भी मेरा इत़ाअ़त गुज़ार बना दिया है)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उस्वए ह़-सना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबा-रका हम सब के लिये मश्अ़ले राह और बेहतरीन नमूना है ज़िन्दगी का कोई पहलू ऐसा नहीं जिस के बारे में हमें आप से रहनुमाई न मिली हो ह़त्ता कि एक मर्द को मिसाली शोहर बनने के लिये जिन ख़ुसूसिय्यात की ज़रूरत है वोह तमाम बातें भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबा-रका से सीखी जा सकती हैं।

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी

1... تذکرۃ الاولیاء، ص ۳۱۱ ملخصاً

www.dawateislami.net

अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ की दिलजूई के लिये उन के साथ कभी कभार ख़ुश त़ब्अ़ भी फ़रमाया करते थे। जैसा कि, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि आप किसी सफ़र में अपने सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थीं फ़रमाती हैं कि मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ दौड़ लगाई तो मैं दौड़ने में आगे निकल गई फिर (कुछ अ़र्से बा'द) जब मैं ज़रा भारी हो गई तो आप ने दौड़ लगाई तो आप मुझ से आगे बढ़ गए फिर फ़रमाया येह उस जीत का बदला हो गया।[1]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : येह है अपनी अज़्वाजे पाक से अख़्लाक़ का बरताव। ऐसे अख़्लाक़ से घर जन्नत बन जाता है, मुसल्मान येह अख़्लाक़ भूल गए, ख़याल रहे कि उम्मुल मुअमिनीन आइशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) लड़क-पन में हुज़ूर (सरवरे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के निकाह़ में आईं जब कि हुज़ूर (عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) की उ़म्र शरीफ़ पचास साल के क़रीब थी, इस क़दर तफ़ावुते उ़म्र (उ़म्र में फ़र्क़) के बा वुजूद आप कभी न घबराईं। क्यूं ? इन अख़्लाक़े करीमाना की वज्ह से।[2] मा'लूम हुवा कि शोहर को अपनी ज़ौजा के साथ मौक़अ़ की मुना-सबत से ख़ुश त़ब्अ़ भी करनी चाहिये इस में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं बल्कि अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ येही चीज़ बाइ़से सवाब भी बन सकती है। मगर बा'ज़ लोग बे रुख़ी, रूखे पन या ख़ुश्क मिज़ाजी पर अपनी सन्जी-दगी की बुन्याद रखते हैं और शायद येह सोचते हैं कि हमारी इक ज़रा सी मुस्कुराहट

1... ابوداود، کتاب الجهاد، باب فی السبق علی الرجل، ۳/۴۲، حدیث: ۲۵۷۸

2... मिरआतुल मनाजीह, 5/96

www.dawateislami.net

या मा'मूली सी ख़ुश तृब्ई हमारी सन्जी-दगी की इमारत को ज़मीन बोस कर देगी हालां कि येह उन की ख़ाम ख़याली है क्यूं कि कभी कभार मिज़ाह (ख़ुश तृब्ई) करना न सिर्फ़ जाइज़ है बल्कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबा-रका भी है अलबत्ता मिज़ाह की कसरत इन्सान की हैबत को ख़त्म कर देती है और ऐसी ख़ुश तृब्ई जो झूट या किसी की दिल आज़ारी पर मब्नी हो वोह ह़राम है। ख़ुश तृब्ई के इलावा सरवरे कौनैन, रह़मते दारैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दाते करीमा में से येह भी है कि आप घर के बा'ज़ काम ख़ुद अपने हाथों से कर लिया करते थे। चुनान्चे,

घरेलू काम करना सुन्नत है

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से सुवाल हुवा कि क्या नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर में काम करते थे ? फ़रमाया : हां आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने ना'लैन मुबारक ख़ुद गांठते, और कपड़ों में पैवन्द लगाते और वोह सारे काम किया करते थे जो मर्द अपने घरों में करते हैं।(1)

इस रिवायत में शोहरों के लिये घरेलू मुआ़-मलात से मु-तअ़ल्लिक़ बे शुमार म-दनी फूल मौजूद हैं। उ़मूमन घर में शोहर का मिज़ाज अपनी बीवी पर हुक्म चलाने का होता है। मा'मूली काम के लिये भी उसे तंग किया जाता है, हालां कि कई काम शोहर ब आसानी ख़ुद भी कर सकता है लेकिन ज़रा सा

1...مسند امام احمد، ۹/ ۵۱۹، حدیث: ۲۵۳۹۲

www.dawateislami.net

हिलना वोह अपनी शान के ख़िलाफ़ समझता है और तो और अगर बीवी उस के वोह काम कर भी दे तो सो सो नख़रे करता, त़रह़ त़रह़ के नक़्स निकालता और ख़्वाह म ख़्वाह उस के चक्कर लगवाता है म-सलन खाना सामने रखा जाए तो नमक या मिर्च मसा-लहे़ के कम ज़ियादा होने पर तब्सिरा आराई करने लगता है और अगर सब बराबर हों तो ज़ाएक़े के बारे में नुक्ता चीनी पर उतर आता है और अगर इस की भी गुन्जाइश न हो तो फिर इस त़रह़ की बातें बनाता है "वोह क्यूं नहीं पकाया ? येह क्यूं पका लिया ? इस का तो दिल ही नहीं चाह रहा, ले जाओ मेरे सामने से उठा कर, मेरे लिये अभी अभी फुलां चीज़ पका दो" वग़ैरा वग़ैरा इसी त़रह़ अगर कपड़ों पर इस्तरी कर दी जाए तो कहता है येह वाला जोड़ा क्यूं इस्तरी कर दिया ? येह नहीं पहनूंगा अभी अभी फुलां जोड़ा इस्तरी कर दो, पानी पेश किया जाए तो कहता है मैं इस गिलास में नहीं पियूंगा कांच के गिलास में ले कर आओ, कांच के गिलास में दिया जाए तो कहता है इस क़दर ठन्डा या इतना गर्म पानी क्यूं ले आई ? जाओ और इस में दूसरा पानी मिला कर लाओ, यूं बिला वज्ह बीवी को दौड़ाता रहता है। ऐ काश ! हम प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अदाओं से कुछ सीखने और इन पर अ़मल करने में काम्याब हो जाएं और घर में चाहत व ख़ुलूस भरा माह़ोल क़ाइम करने की ग़रज़ से ह़त्तल इम्कान अपने काम अपने हाथों से करने के इ़लावा अहले ख़ाना का हाथ बटाने की भी कोशिश किया करें। इस से न सिर्फ़ बीवी के दिल में शोहर की मह़ब्बत बढ़ेगी बल्कि उसे घर में अपनाइय्यत का एह़सास होगा। अलबत्ता ऐसा न हो कि सारे काम शोहर अपने सर पर उठा ले क्यूं कि बिला ज़रूरत किया जाने वाला तआ़वुन बीवी को सुस्त और काहिल बना सकता है। बहर ह़ाल

www.dawateislami.net

शोहर को चाहिये कि बीवी को फ़क़त अपनी ख़िदमत के फ़ज़ाइल ही न सुनाता रहे बल्कि जहां तक मुम्किन हो ख़ुद भी बीवी की ख़िदमत करे कि इस में शोहर के लिये अज्रो सवाब है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : जब कोई शख़्स अपनी बीवी को पानी पिलाता है तो उसे इस का अज्र दिया जाता है। रावी कहते हैं कि फिर मैं अपनी बीवी के पास आया और उसे पानी पिलाया फिर उसे भी वोह हदीसे पाक सुनाई जो मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी थी।[1]

घर में बच्चे की तरह और क़ौम में मर्द बन कर रहो

ख़लीफ़ए दुवुम अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सख़्त मिज़ाज होने के बा वुजूद फ़रमाया : आदमी को अपने घर में बच्चे की तरह रहना चाहिये और जब उस से दीनी उमूर में से कोई चीज़ तलब की जाए जो उस के पास हो तो उसे मर्द पाया जाए। हज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अ़क़्ल मन्द को चाहिये कि घर में बच्चे की तरह और लोगों में मर्दों की तरह रहे।[2]

मज़्कूरा बाला रिवायात की रोशनी में इस बात का बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि शरीअ़त ने मर्द को अपने अहले ख़ाना के साथ संगदिली और बे हिसी वाला रवय्या अपनाने से

1... مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فی نفقۃ الرجل...الخ، ۳/۳۰۰، حدیث: ۴۶۵۹

2... احیاء العلوم، کتاب آداب النکاح، الباب الثالث فی آداب المعاشرۃ...الخ، ۲/۵۷

www.dawateislami.net

मन्अ़ किया है। मर्द को चाहिये कि अपनी बीवी के लिये ऐसा दरख़्त साबित हो जिस के साए में उसे हर त़रह़ का सुकून मुयस्सर आए और येह उसी सूरत में मुम्किन है कि वोह बीवी के शर-ई हुक़ूक़ अह़सन त़रीक़े से अदा करे। आइये शरीअ़त की रोशनी में बीवी के हुक़ूक़ का जाएज़ा लेते हैं। चुनान्चे,

शोहर पर औ़रत के हुक़ूक़

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्अ़ रिसालत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में जब येह सुवाल हुवा कि शोहर पर बीवी के क्या हुक़ूक़ हैं तो इर्शाद फ़रमाया : नफ़क़ा सकनी (या'नी खाना, लिबास व मकान), मह्र, हुस्ने मुआ़-शरत, नेक बातों और ह़या व ह़िजाब की ता'लीमो ताकीद और इस के ख़िलाफ़ से मन्अ़ व तहदीद, हर जाइज़ बात में उस की दिलजूई (औ़रत के हुक़ूक़ में से है) और मर्दाने ख़ुदा की सुन्नत पर अ़मल की तौफ़ीक़ हो तो मा वराए मनाहिये शरइ़य्या में उस की ईज़ा का तह़म्मुल कमाले ख़ैर है अगर्चे येह ह़क़्क़े ज़न नहीं (या'नी जिन बातों को शरीअ़त ने मन्अ़ किया है उन में कोई रिआ़यत न दे, इन के इलावा जो मुआ़-मलात हैं उन में अगर बीवी की त़रफ़ से किसी ख़िलाफ़े मिज़ाज बात के सबब तक्लीफ़ पहुंचे तो सब्र करना बहुत बड़ी भलाई है। अलबत्ता येह औ़रत के हुक़ूक़ में से नहीं)।[1]

नान नफ़क़ा वाजिब है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बीवी से मु-तअ़ल्लिक़ शोहर

1... फ़तावा र-ज़विय्या, 24/371

www.dawateislami.net

पर लागू होने वाले बयान कर्दा हुक़ूक़ में से बा'ज़ का तअ़ल्लुक़ बिल ख़ुसूस बीवी की दुन्यवी बेहतरी से है जब कि बा'ज़ का तअ़ल्लुक़ मियां बीवी दोनों ही की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी से है। जिन हुक़ूक़ का तअ़ल्लुक़ औ़रत की दुन्यवी बेहतरी से है वोह नफ़क़ा, सकनी (खाना, लिबास व मकान) और महर हैं इस लिये शोहर पर लाज़िम है कि वोह बीवी के खाने, पहनने, रहने और दूसरी ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी का अपनी हैसिय्यत के मुताबिक़ इन्तिज़ाम करे और येह बात ज़ेहन नशीन रखे कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दी मेरे निकाह़ के बन्धन में बंधी हुई है और अपने मां बाप, भाई बहन और तमाम अ़ज़ीज़ो अक़ारिब से जुदा हो कर सिर्फ़ मेरी हो कर रह गई है और मेरे दुख सुख में बराबर की शरीक बन गई है लिहाज़ा शरीअ़त के मुताबिक़ इस की ज़रूरिय्यात का इन्तिज़ाम करना मेरा फ़र्ज़ है। बहारे शरीअ़त में है : "अगर येह अन्देशा है कि निकाह़ करेगा तो नान नफ़क़ा न दे सकेगा या जो ज़रूरी बातें हैं उन को पूरा न कर सकेगा तो (निकाह़ करना) मक्रूह है और इन बातों का यक़ीन हो तो निकाह़ करना ह़राम मगर निकाह़ बहर ह़ाल हो जाएगा।"[1] अल ग़रज़ शोहर को चाहिये कि अहले ख़ाना पर तंगी करने के बजाए रिज़ाए इलाही के लिये दिल खोल कर ख़र्च करे। आइये तरग़ीब के लिये अहले ख़ाना पर ख़र्च से मु-तअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबा-रका में बयान किये गए फ़ज़ाइल मुला-ह़ज़ा कीजिये।

जितना ख़र्च उतना ही अज्र

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए हफ़्तुम, 2/5

www.dawateislami.net

ने उन्हें इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये तुम जितना भी ख़र्च करते हो उस का अज्र दिया जाएगा ह़त्ता कि जो लुक़्मा तुम अपनी बीवी के मुंह में डालते हो (उस का भी अज्र मिलेगा) ।[1]

सब से ज़ियादा अज्र वाला दीनार

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : एक दीनार वोह है जिसे तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करते हो, एक दीनार वोह है जिसे तुम ग़ुलाम पर ख़र्च करते हो, एक दीनार वोह है जिसे तुम मिस्कीन पर स-दक़ा करते हो, एक दीनार वोह है जिसे तुम अपने अहलो इ़याल पर ख़र्च करते हो, इन में सब से ज़ियादा अज्र उस दीनार पर मिलेगा जिसे तुम अपने अहलो इ़याल पर ख़र्च करते हो ।[2]

मीज़ान में रखी जाने वाली पहली चीज़

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : सब से पहले जो चीज़ इन्सान के तराज़ूए आ'माल में रखी जाएगी वोह इन्सान का वोह ख़र्च होगा जो उस ने अपने घर वालों पर किया होगा ।[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1...بخاری، کتاب الجنائز، باب رثاء النبی...الخ، ۱/۴۳۸، حدیث: ۱۲۹۵

2...مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل النفقۃ علی العیال...الخ، ص۴۹۹، حدیث: ۹۹۵

3...معجم الاوسط، ۴/۳۲۸، حدیث: ۶۱۳۵

www.dawateislami.net

निज़ामे फ़ित्रत बदलने का अन्जाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खाने पीने, ओढ़ने पहनने और बीवी की मुनासिब रिहाइश का बन्दो बस्त करने के साथ साथ उस के उन हुक़ूक़ की त़रफ़ भी भरपूर तवज्जोह देनी चाहिये जो मियां बीवी दोनों ही की दुन्या व आख़िरत को संवारने और बेहतर बनाने वाले हैं और वोह हुक़ूक़ येह हैं कि बीवी को अच्छे रहन सहन की तरबियत और नेक बातों की ता'लीम दे नीज़ उसे ह़या व ह़िजाब की ताकीद करे मगर फ़ी ज़माना शाज़ो नादिर ही ऐसे अफ़्राद होंगे जो बीवी की दुन्यवी ज़रूरिय्यात पूरी करने के इलावा उसे नेकी, ह़या और ह़िजाब (पर्दे) की ता'लीम देते और बुराई से मन्अ़ करते हों। शरीअ़त ने शोहर को घर का अफ़्सर बना कर इसे अहले ख़ाना की ज़रूरिय्यात को पूरा करने की ज़िम्मादारी सोंपी है जब कि औ़रत को घर की चार दीवारी अ़त़ा कर के इस की इ़स्मत व इ़फ़्फ़त (पारसाई, पाक दामनी) की ह़िफ़ाज़त का सामान किया है। मगर अफ़्सोस ! हम ने अह़कामे शर-अ़ पसे पुश्त डाल कर अपनी औ़रतों को बे पर्दा कर के गलियों और बाज़ारों की ज़ीनत बना दिया। शादी बियाह की तक़रीबात हों या आ़म मा'मूलात चादर और चार दीवारी का कोई लिह़ाज़ नहीं रखा जाता बल्कि शादियों में तो बे पर्दगी कुछ ज़ियादा ही उ़रूज पर होती है इलावा अज़ीं ना मह़रम रिश्तेदारों से पर्दे का एहतिमाम बिल ख़ुसूस देवर और भाभी के दरमियान पर्दे का लिह़ाज़ तो शायद ही किसी घर में किया जाता हो।

अल ग़रज़ जिस औ़रत को घर की चार दीवारी की मलिका बनाया गया था उस का ह़ाल येह है कि मर्दों ने शादी बियाह के

www.dawateislami.net

जहेज़ से ले कर फ्रूट, सब्ज़ी, गोश्त और परचून ख़रीदने तक की ज़िम्मेदारी उस के सर डाल दी और इस पर तुर्रा येह कि बच्चों को स्कूल से लाने ले जाने या रिश्तेदारों से मिलाने के लिये भी शोहर के पास तो फ़ुरसत नहीं लिहाज़ा येह बार भी मुस्तक़िल तौ़र पर उस सिन्फ़े नाज़ुक के कन्धों पर डाल दिया गया। यूं गोया मर्द के बजाए औ़रत घर की अफ़्सर बन गई। ज़रा सोचिये कि जब औ़रत सौदा सलफ़ या दीगर ज़रूरिय्यात के लिये दिन में कई कई बार घर से बाहर जाएगी तो क्या सेंकड़ों निगाहें उस का तआ़क़ुब नहीं करेंगी.....? क्या ख़रीदारी वग़ैरा की वज्ह से कई ग़ैर महरमों से उस का वासिता़ नहीं पड़ेगा.....? क्या इस वज्ह से मियां बीवी के दरमियान शुकूको शुबुहात पैदा नहीं होंगे.....? क्या बद गुमानियों और इल्ज़ाम तराशियों के दरवाज़े नहीं खुलेंगे.....? क्या महब्बत ख़त्म हो कर दोनों के दरमियान नफ़रत की दीवार खड़ी नहीं होगी.....? ज़ाहिर है जब हम ने निज़ामे फ़ित़रत की बुन्याद ही उलट दी तो घर का चैनो सुकून कैसे बर क़रार रह सकता है ? और अगर बिलफ़र्ज़ येह तमाम ख़राबियां न भी हों तो क्या येह ख़राबी कम है कि मर्दों के काम औ़रत के सिपुर्द कर के और उसे घर से बाहर निकाल कर हम ने उसे बे पर्दगी की दलदल में धकेल दिया और जहन्नम का ईंधन बनने के लिये छोड़ दिया। याद रखिये ! शोहर घर का अफ़्सर व सर-बराह है और हर सर-बराह की त़रह़ शोहर से भी उस के मा तह़तों के बारे में बाज़पुर्स होगी लिहाज़ा सिर्फ़ दुन्यावी ही नहीं बल्कि दीनी मुआ़-मलात में भी अपनी और अपने बाल बच्चों की अच्छी तरबियत की त़रफ़ भरपूर तवज्जोह देते हुए नारे जहन्नम से बचने की तदबीर करनी चाहिये। इर्शादे ख़ुदा वन्दी है :

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝۶

(پ۲۸، التحریم: ۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं उस पर सख़्त कर्रे फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं जो **अल्लाह** का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं ।

नेकी का हुक्म दीजिये

जब नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अ़र्ज़ गुज़ार हुए : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम अपने अहलो इ़याल को आतशे जहन्नम से किस त़रह़ बचा सकते हैं ? सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अपने अहलो इ़याल को उन कामों का हुक्म दो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पसन्द हैं और उन कामों से रोको जो रब तआ़ला को ना पसन्द हैं ।[1]

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम सब निगरान हो और तुम में से हर एक से उस के मा तह़्त अफ़्राद के बारे में पूछा जाएगा । बादशाह निगरान है, उस से उस की रिआ़या के बारे में पूछा जाएगा । आदमी अपने अहलो इ़याल का निगरान है उस से उस के अहलो इ़याल के बारे में पूछा जाएगा । औ़रत अपने ख़ावन्द के घर और औलाद की निगरान है उस से उन के बारे में

1... درمنثور، پ۲۸، التحریم، تحت الآیۃ: ۶، ۸/۲۲۵

www.dawateislami.net

पूछा जाएगा ।[1]

लिहाज़ा शोहर को चाहिये कि अपने मन्सब को मद्दे नज़र रखते हुए तमाम तर फ़राइज़े मन्सबी को बख़ूबी अन्जाम दे, ख़ुद भी बुराइयों से बचे और हत्तल मक़्दूर अपने बीवी बच्चों को भी गुनाहों की आलू-दगी से दूर रखे बिल ख़ुसूस आज कल बे पर्दगी व बे हयाई का जो सैलाब उमन्ड आया है उस से अपने घर वालों को बचाए वरना दुन्या व आख़िरत में ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना करना पड़ेगा । शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "बा हया नौ जवान" के सफ़हा नम्बर 21 पर तहरीर फ़रमाते हैं : जो लोग बा वुजूदे क़ुदरत अपनी औरतों और महारिम को बे पर्दगी से मन्अ न करें वोह दय्यूस हैं, रहमते आ-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ثَلَاثَةٌ قَدْ حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِمُ الْجَنَّةَ مُدْمِنُ الْخَمْرِ وَالْعَاقُّ وَالدَّيُّوْثُ الَّذِىْ يُقِرُّ فِىْ اَهْلِهِ الْخَبَثَ[2] या'नी तीन शख़्स हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत हराम फ़रमा दी है एक तो वोह शख़्स जो शराब का आदी हो, दूसरा वोह शख़्स जो अपने मां बाप की ना फ़रमानी करे, और तीसरा वोह दय्यूस (या'नी बे हया) कि जो अपने घर वालों में बे ग़ैरती के कामों को बर क़रार रखे ।

दय्यूस किसे कहते हैं ?

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के अल्फ़ाज़ "वोह दय्यूस (या'नी बे हया) कि जो अपने घर वालों में बे ग़ैरती के कामों को बर क़रार रखे"

1...بخاری، کتاب العتق، باب کراھۃ التطاول...الخ، ۲/۱۵۹، حدیث: ۲۵۵۴

2...مسند امام احمد، ۲/۳۵۱، حدیث: ۵۳۷۲

www.dawateislami.net

के तहूत फ़रमाते हैं : बा'ज़ शारेह़ीन ने फ़रमाया कि यहां خَبَث से मुराद ज़िना और अस्बाबे ज़िना हैं या'नी जो अपनी बीवी बच्चों के ज़िना या बे ह़याई, बे पर्दगी, अजनबी मर्दों से इख़्तिलात़, बाज़ारों में ज़ीनत से फिरना, बे ह़याई के गाने नाच वग़ैरा देख कर बा वुजूद क़ुदरत के न रोके वोह बे ह़या दय्यूस है।[1] मा'लूम हुवा कि बा वुजूदे क़ुदरत अपनी ज़ौजा, मां, बहनों और जवान बेटियों वग़ैरा को गलियों, बाज़ारों, शॉपिंग सेन्टरों, मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में बे पर्दा घूमने फिरने, अजनबी पड़ोसियों, ना महरम रिश्तेदारों, ग़ैर महरम मुलाज़िमों, चोकीदारों, ड्राइवरों से बे तकल्लुफ़ी और बे पर्दगी से मन्अ़ न करने वाले सख़्त अह़मक़, बे ह़या, दय्यूस, जन्नत से महरूम और जहन्नम के ह़क़दार हैं। लिहाज़ा अब भी वक़्त है कि अपनी ज़िम्मेदारी का एह़सास करते हुए घर वालों को बुराइयों के सैलाब में बहने से बचा लीजिये इस से पहले कि पानी सर से बुलन्द हो जाए और आप कफ़े अफ़्सोस मलते रह जाएं। आइये इस बात का अ़ह्द कीजिये कि हम ख़ुद भी शर-ई अह़काम की पाबन्दी करेंगे और अपने घर वालों को भी इस का पाबन्द बनाएंगे नीज़ अपने घर में म-दनी माह़ोल क़ाइम कर के उसे सुन्नतों का गहवारा बनाएंगे।

घर का अफ़्सर

याद रखिये ! घर एक इदारे की त़रह़ है और जिस त़रह़ दुन्या का कोई भी इदारा सर-बराह के बिग़ैर नहीं चलता, कोई न कोई अफ़्सर ज़रूर होता है जो सब की निगरानी करता है और अगर कोई अपनी ह़ुदूद से तजावुज़ करे या अपनी ज़िम्मादारी अदा

1... मिरआतुल मनाजीह़, 5/337

www.dawateislami.net

न करे तो ब क़दरे ज़रूरत सख़्ती भी करता है। इसी त़रह़ घर के इदारे का सर-बराह और अफ़्सर शोहर को बनाया गया है जब कि बीवी और बच्चों को उस का मा तह़त किया गया है अफ़्सर होने की ह़ैसिय्यत से शोहर को जहां बीवी बच्चों के खाने पीने, ओढ़ने पहनने, और इन की ज़रूरिय्यात का ख़याल रखने की ज़िम्मादारी सोंपी गई है वहीं इसे कुछ ज़ाइद इख़्तियारात भी दिये गए हैं। अलबत्ता इस पर लाज़िम है कि अपनी ज़िम्मादारी को समझते हुए शरीअ़त के मुत़ाबिक़ अपनी बीवी से बरताव करे और अगर वोह सरताबी करे तो शर-ई अह़कामात की रोशनी में बाहमी मुआ़-मलात ह़ल करे और उसे राहे रास्त पर लाने की कोशिश करे। चुनान्चे फ़रमाने ख़ुदा वन्दी है :

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّ بِمَاۤ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَیْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَ الّٰتِیْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَ اهْجُرُوْهُنَّ فِی الْمَضَاجِعِ وَ اضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَیْهِنَّ سَبِیْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِیًّا كَبِیْرًا ﴿۳۴﴾

(پ۵، النساء: ۳۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मर्द अफ़्सर हैं औ़रतों पर इस लिये कि **अल्लाह** ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस लिये कि मर्दों ने इन पर अपने माल ख़र्च किये तो नेक बख़्त औ़रतें अदब वालियां हैं ख़ावन्द के पीछे ह़िफ़ाज़त रखती हैं जिस त़रह़ **अल्लाह** ने ह़िफ़ाज़त का हुक्म दिया और जिन औ़रतों की ना फ़रमानी का तुम्हें अन्देशा हो तो उन्हें समझाओ और उन से अलग सोओ और उन्हें मारो फिर अगर वोह तुम्हारे हुक्म में आ जाएं तो उन पर ज़ियादती की कोई राह न चाहो बेशक **अल्लाह** बुलन्द बड़ा है।

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان इस आयत के तहत फ़रमाते हैं : मर्द या ख़ावन्द औरतों या बीवियों के अफ़्सर हाकिम मुक़र्रर किये गए हैं, बीवियां इन की मा तहत, इस की दो वज्ह हैं : ❀ एक तो येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने मर्द को औरत पर बुज़ुर्गी दी है कि नुबुव्वत, ख़िलाफ़त, क़ज़ा, हुदूद में गवाही, जिहाद वग़ैरा मर्दों को ही बख़्शे, उन्हें कामिल अ़क़्ल, कामिले दीन बनाया। औरतों की अ़क़्ल नाक़िस रखी, दीन भी कि माली मुआ़-मलात में दो औरतों की गवाही एक मर्द के बराबर क़रार दी, औरतें ब हालते हैज़ो निफ़ास नमाज़, तिलावते क़ुरआन, रोज़े वग़ैरा से महरूम, मर्द येह काम हमेशा करते हैं। ❀ दूसरे येह कि मर्दों ने औरतों पर माल ख़र्च किये हैं कि औरत का महर, ख़र्चा कफ़न दफ़्न ख़ावन्द के ज़िम्मे है, मर्द का महर ख़र्चा वग़ैरा औरत के ज़िम्मे नहीं, और क़ाइदा है कि ख़र्च देने वाला ख़र्च लेने वाले का हाकिम होता है। पस नेककार, नेक बख़्त बीवियां अपने रब की मुतीअ़ होती हैं। ख़ावन्द की पसे पुश्त हिफ़ाज़त करती हैं कि अपनी इस्मत, ख़ावन्द का माल, औलाद वग़ैरा ज़ाएअ़ नहीं करतीं क्यूं कि वोह समझती हैं कि रब तआ़ला ने हर तरह़ इन की हिफ़ाज़त फ़रमाई उन पर पर्दा फ़र्ज़ फ़रमा कर उन की इ़ज़्ज़तो इस्मत महफ़ूज़ कर दी (और) ख़ावन्द के ज़िम्मे उन का ख़र्चा वग़ैरा मुक़र्रर फ़रमा कर उन्हें दर बदर फिरने से बचा लिया कि कमाएं मर्द, खाएं और ख़र्च करें औरतें।

मज़ीद फ़रमाते हैं : जिन बीवियों की ना फ़रमानी का तुम को ख़तरा हो तो फ़ौरन तलाक़ का इरादा न कर लो, बल्कि अव्वलन उन्हें समझाओ इस पर भी बाज़ न आएं तो उन्हें घर में रखते हुए

www.dawateislami.net

उन से कलाम सलाम, प्यार महब्बत वग़ैरा छोड़ दो इस पर भी बाज़ न आएं तो उन्हें इस्लाह़ की ग़रज़ से मा'मूली मार मारो मगर इताअ़त कर लेने पर उन पर सख़्ती के लिये बहाने न तलाश करो बल्कि महब्बत व प्यार से बरतावे करो। येह जान लो कि तुम औरतों के ह़ाकिम हो (तो) **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारा ह़ाकिम, तुम पर क़ाबू रखने वाला है, जब वोह तुम्हारी ख़ताएं बख़्शता है तो तुम भी अपने मा तहूतों के जुर्म बख़्शो। (बहर ह़ाल) ख़ावन्द ह़ाकिम है, बीवी उस की मा तहूत, ख़ावन्द घर का बादशाह है, बीवी घर की वज़ीर, लिहाज़ा जो औरत व मर्द को बराबर कहे या औरत को मर्द से अफ़्ज़ल माने वोह क़ुदरत का मुक़ाबला करता है। आज यूरोपियन अक़्वाम ने औरत व मर्द में बराबरी की है मगर उन्हें जो मुसीबतें भुगत्ना पड़ रही हैं उसे ख़ुद ही जानते हैं कि साल में लाखों त़लाक़ें होती हैं, बात बात पर त़लाक़, घर सह़ीह़ मा'नी में आबाद नहीं, (क्यूं कि) मुल्क में दो बराबर के ह़ाकिम न चाहिएं, (जब) आस्मान पर सूरज एक, दरख़्त की जड़ एक, इन्सान का दिल एक, तो चाहिये कि घर का ह़ाकिमे आ'ला भी एक ही हो।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा आयते मुबा-रका और इस की तफ़्सीर में मियां बीवी की ज़िन्दगी पुर मसर्रत बनाने के लिये निहायत अहम म-दनी फूल बयान किये गए हैं। वाक़ेई अगर बीवी अपने शोहर की बराबरी करने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले के मुत़ाबिक़ शोहर की बर-तरी तस्लीम करे और इस की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी करे और दूसरी त़रफ़ शोहर अपनी ज़िम्मेदारी का एह़सास करते हुए बीवी के हुक़ूक़ अदा

1... तफ़्सीरे नईमी, 1/59 मुल-त-क़त़न

www.dawateislami.net

करने में कोई कसर न छोड़े तो काफ़ी ह़द तक लड़ाई झगड़ों का सद्दे बाब हो सकता है। घर का अफ़्सर व ह़ाकिम होने की ह़ैसिय्यत से शोहर को येह बात मद्दे नज़र रखनी चाहिये कि अगर बीवी ना फ़रमानी करती है तो फ़ौरन उसे मारने या त़लाक़ का परवाना दे कर रुख़्सत करने के बजाए इस मुआ़-मले को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के मुत़ाबिक़ ह़ल करे। सब से पहले उसे अच्छे त़रीक़े से समझाए अगर न समझे तो बिस्तर अलग कर के नाराज़ी का इज़्हार करे फिर भी बाज़ न आए तो शरीअ़त ने घर टूटने से बचाने के लिये मा'मूली त़रीक़े से मारने की इजाज़त दी है। याद रहे कि मारने की इजाज़त देने का मत़लब येह नहीं है कि शोहर बीवी पर ख़ूंख़ार भेड़िये की त़रह़ ह़म्ला आवर हो जाए और मार मार कर उस की हड्डी पस्ली एक कर के ज़ुल्मो सितम की सारी ह़दें पार कर जाए यक़ीनन ऐसा करना सरासर ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की पैरवी है। आइये ! शरीअ़त की रोशनी में इस बात का जाएज़ा लेते हैं कि वोह कौन सी सूरतें हैं जिस में बीवी को मारने की इजाज़त है।

बीवी को किन सूरतों में मारने की इजाज़त है ?

फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में है कि चार वुजूहात की बिना पर बीवी को मारना शोहर के लिये जाइज़ है :

1. शोहर (अपने लिये) बनाव सिंघार करने का हुक्म दे मगर औ़रत न करे।
2. शोहर सोह़बत करना चाहे और वोह न करने दे जब कि शर-ई मजबूरी भी न हो।
3. नमाज़ न पढ़े या जनाबत व ह़ैज़ के बा'द ग़ुस्ल न करे क्यूं कि येह भी नमाज़ न पढ़ने जैसा ही है।

www.dawateislami.net

4. मह्र की अदाएगी के बा वुजूद वोह शोहर की इजाज़त के बिग़ैर घर से चली जाए।[1]

बीवी को न मारना अफ़्ज़ल है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा चारों चीज़ों का तअ़ल्लुक़ बराहे रास्त **अल्लाहु** रब्बुल आ़-लमीन और शोहर के ह़क़ से है इस लिये इन अहम उमूर के ह़ुसूल के लिये जब और कोई तदबीर कारगर न हो तो शोहर को मारने की इजाज़त दी गई है। मगर अफ़्सोस ! आज कल मुआ़-शरे में शायद ही कोई ऐसा शोहर होगा जो इन अहम उमूर को छोड़ने पर बीवी को डांट डपट करता हो। बल्कि यहां तो सालन में नमक मिर्च कम या ज़ियादा हो जाए, खाना देर से मिला, कपड़े इस्तरी न हुए, लिबास अच्छी त़रह़ न धुला, पानी लाने में देर हो गई या ठन्डा न था, घर की सफ़ाई में कुछ कोताही हो गई या सास व नन्दों ने झूटी सच्ची शिकायत लगा दी तो मार मार कर उस का बुरा ह़श्र कर दिया जाता है। याद रहे कि अगर बीवी से वाक़ेई ऐसा क़ुसूर हो भी जाए जिस में ख़ुद शरीअ़त ने मारने की इजाज़त दी है तो वहां भी मारना सिर्फ़ जाइज़ है वाजिब नहीं अलबत्ता न मारना अफ़्ज़ल है। चुनान्चे

तफ़्सीरे कबीर में है कि इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मारना मुबाह़ है लेकिन न मारना अफ़्ज़ल है। अलबत्ता अगर मारे तो इतना न मारे कि हलाकत तक पहुंचा दे बल्कि बदन पर अलग अलग मक़ाम पर मारे एक ही जगह न मारे और चेहरे पर मारने से बचे। बुने हुए रुमाल या हाथ से मारे, कोड़ा और डन्डा

1...فتاوی قاضی خان، کتاب النکاح، فصل فی حقوق الزوجیة، ۱/ ۲۰۳

www.dawateislami.net

इस्ति'माल न किया जाए अल ग़रज़ हलके से हलका त़रीक़ा इख़्तियार किया जाए। इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में पहले बीवियों को समझाने का हुक्म दिया फिर बिस्तरों से अ़ला-ह़-दगी को बयान किया और आख़िर में मारने की इजाज़त दी तो येह इस बात पर सरा-ह़तन तम्बीह है कि नरमी से ग़रज़ ह़ासिल हो जाए तो इसी पर इक्तिफ़ा लाज़िम है सख़्ती इख़्तियार करना जाइज़ नहीं।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किस क़दर अफ़्सोस है उन लोगों पर जो शरीअ़त की दी गई इजाज़त से तजावुज़ करते हुए अपनी बीवियों को ज़ुल्मन मारते हैं, छोटी छोटी बातों पर जब दिल चाहता है बे दरेग़ पीटते हैं, बीवी क़दमों में गिर कर मुआ़फ़ी मांगती रह जाती है मगर उन्हें ज़रा रह़्म नहीं आता। किस क़दर अफ़्सोस की बात है कि एक तो सिन्फ़े नाज़ुक पर ज़ुल्म के पहाड़ तोड़े जाते हैं और फिर इसे मर्दानगी और बहादुरी समझा जाता है। कमज़ोर औ़रत पर अपनी त़ाक़त का इज़्हार करने वाले कान खोल कर सुन लें कि रोज़े ह़श्र ख़ुदा वन्दे क़ह्हारो जब्बार की बारगाह में पेश होना है। अगर वहां इस मज़्लूमा ने तड़प कर आप के दुन्या में किये जाने वाले ज़ुल्मो सितम के ख़िलाफ़ फ़रियाद कर दी तो बताएं क्या करेंगे ? लिहाज़ा अभी वक़्त है तौबा कर लें, अगर ज़ुल्म किया है तो मुआ़फ़ी मांग कर राज़ी कर लें कहीं ऐसा न हो कि बरोज़े क़ियामत सख़्त मुश्किल में फंस जाएं क्यूं कि उस रोज़ हर ज़ालिम को अपने ज़ुल्म का ह़िसाब देना होगा बल्कि अह़ादीसे मुबा-रका की रोशनी में ऐसे बद नसीबों की नेकियां मज़्लूमों को

1... التفسیر الکبیر، پ۵، النساء، تحت الآیۃ: ۳۴، ۴/۷۲ ملخصًا

www.dawateislami.net

दे दी जाएंगी और नेकियां न होने या ख़त्म हो जाने की सूरत में मज़्लूमों के गुनाह उन के सर डाल दिये जाएंगे । चुनान्चे

ज़ालिम का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन हज्जाज कुशैरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपने मश्हूर मज्मूअ़ए हदीस "सहीह़ मुस्लिम" में एक हदीसे पाक नक़्ल करते हैं : सरकारे नामदार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो मुफ़्लिस कौन है ? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से जिस के पास दराहिम व सामान न हो वोह मुफ़्लिस है । फ़रमाया : मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े और ज़कात ले कर आया और यूं आया कि इसे गाली दी, उस पर तोहमत लगाई, इस का माल खाया, उस का ख़ून बहाया, उसे मारा । तो उस की नेकियों में से कुछ इस मज़्लूम को दे दी जाएं और कुछ उस मज़्लूम को, फिर अगर इस के ज़िम्मे जो हुक़ूक़ थे उन की अदाएगी से पहले इस की नेकियां ख़त्म हो जाएं तो उन मज़्लूमों की ख़ताएं ले कर उस ज़ालिम पर डाल दी जाएं फिर उसे आग में फेंक दिया जाए ।[1]

ईज़ा का बदला

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन श-जरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ समुन्दर के कनारे होते हैं इसी त़रह़ जहन्नम के भी

1... مسلم، کتاب البر والصلۃ والادب، باب تحریم الظلم، ص ۱۳۹۴، حدیث: ۲۵۸۱

www.dawateislami.net

कनारे हैं जिन में बुख़्ती ऊंटों जैसे सांप और ख़च्चरों जैसे बिच्छू रहते हैं । अहले जहन्नम जब अ़ज़ाब में कमी के लिये फ़रियाद करेंगे तो हुक्म होगा कनारों से बाहर निकलो वोह जूं ही निकलेंगे तो वोह सांप उन्हें होंटों और चेहरों से पकड़ लेंगे और उन की खाल तक उतार लेंगे वोह लोग वहां से बचने के लिये आग की त़रफ़ भागेंगे फिर उन पर खुजली मुसल्लत़ कर दी जाएगी वोह इस क़दर खुजाएंगे कि उन का गोश्त पोस्त सब झड़ जाएगा और सिर्फ़ हड्डियां रह जाएंगी, पुकार पड़ेगी : ऐ फुलां ! क्या तुझे तक्लीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां । तो कहा जाएगा येह उस ईज़ा का बदला है जो तू मोमिनों को दिया करता था ।[1]

ज़ुल्म की मुआ़फ़ी मांग लो

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत अपने रिसाले "**ज़ुल्म का अन्जाम**" के सफ़ह़ा 22 पर फ़रमाते हैं : हमारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने उस्वए ह़-सना के ज़रीए़ हम ग़ुलामों को हुक़ूक़ुल इ़बाद का ख़याल रखने की जिस ह़सीन अन्दाज़ में ता'लीम दी है उस की एक रिक़्क़त अंगेज़ झलक मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये । चुनान्चे

मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वफ़ाते ज़ाहिरी के वक़्त इज्तिमाए़ आ़म में ए'लान फ़रमाया : अगर मेरे ज़िम्मे किसी का क़र्ज़ आता हो, अगर मैं ने किसी की जानो माल और आबरू को सदमा पहुंचाया हो तो मेरी जानो माल और आबरू ह़ाज़िर है, इस दुन्या में बदला ले ले । तुम में से कोई येह

1... الترغیب والترھیب، ۴/۲۸۰، حدیث: ۵۶۴۹

www.dawateislami.net

अन्देशा न करे कि अगर किसी ने मुझ से बदला लिया तो मैं नाराज़ हो जाऊंगा येह मेरी शान नहीं । मुझे येह अम्र बहुत पसन्द है कि अगर किसी का हक़ मेरे ज़िम्मे है तो वोह मुझ से वुसूल कर ले या मुझे मुआफ़ कर दे । फिर फ़रमाया : ऐ लोगो ! जिस शख़्स पर कोई हक़ हो उसे चाहिये कि वोह अदा करे और येह ख़याल न करे कि रुस्वाई होगी इस लिये कि दुन्या की रुस्वाई आख़िरत की रुस्वाई से बहुत आसान है ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर अब तक ज़ुल्मो सितम का मुआ-मला रहा है या कभी कोई ज़ियादती की है तो फ़ौरन से पेशतर हर क़िस्म की शर्म बालाए ताक़ रखते हुए मुआफ़ी मांग लीजिये और ख़ुश उस्लूबी के साथ उस के हुक़ूक़ की अदाएगी का ज़ेहन बनाइये कि इसी में दोनों जहान की भलाई है । याद रहे कि बीवी शोहर की तमाम तवक़्क़ुआत पर पूरा उतरे येह ज़रूरी नहीं लिहाज़ा अगर बीवी में चन्द एक आदतें ख़िलाफ़े मिज़ाज और इश्तिआल अंगेज़ हों भी तो उस की बहुत सी पसन्दीदा आदतों को पेशे नज़र रख कर उन का लिहाज़ करते हुए ना पसन्दीदा आदतों को नज़र अन्दाज़ कर देना चाहिये नीज़ बीवी के ज़रीए हासिल होने वाले कसीर मनाफ़ेअ़ की रिआयत करते हुए अख़्लाक़ी तौर पर उसे मारने से गुरेज़ ही करना चाहिये । याद रखिये कि बीवी के साथ अच्छा या बुरा सुलूक करना इन्सान के अच्छे या बुरे होने का पता देता है । बहर हाल बीवी को सुधारने और सीधा करने की आड़ में इस पर ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़ने वालों को अपनी इस ग़लत और नुक़्सान देह रविश को छोड़ कर उस के साथ नरमी का बरताव करना चाहिये ।

1... تاریخ ابن عساکر ، الفضل بن العباس بن عبد المطلب، ۴۸ / ۳۲۳ ملخصاً

www.dawateislami.net

अगर इख़्तिलाफ़ बढ़ जाए तो क्या करे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस बात में तो कोई शक नहीं कि हर शख़्स की येह दिली ख़्वाहिश होती है कि इस के घर में हमेशा ख़ुशियों की फ़रावानी रहे और कभी कोई ग़म न आए लेकिन बसा अवक़ात न चाहते हुए भी मियां बीवी में से किसी एक या दोनों की अना के सबब मा'मूली बातें भी झगड़ों और फ़सादात का रूप धार लेती हैं ह़त्ता कि नौबत त़लाक़ तक जा पहुंचती है। अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कभी मियां बीवी के दरमियान इस त़रह़ का इख़्तिलाफ़ या कशी-दगी पैदा हो भी जाए तो दोनों को निहायत समझदारी का सुबूत देते हुए नरमी, बरदाश्त, दर गुज़र, मुआ़-मला फ़हमी और बाहमी समझौते से काम लेते हुए अपनी अपनी आतशे ग़ज़ब को बुझाने की कोशिश करनी चाहिये बिल ख़ुसूस शोहर पर लाज़िम है कि त़लाक़ देने में हरगिज़ हरगिज़ जल्दी न करे। कहीं ऐसा न हो कि बे सोचे समझे त़लाक़ दे बैठे और जब दिमाग़ से ग़ुस्से का ख़ुमार उतरे तो दामन में ह़स्रतो पछतावे के सिवा कुछ बाक़ी न रहे। आइये इस ज़िम्न में दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत की त़रफ़ से त़लाक़ से मु-तअ़ल्लिक़ कुछ अहम बातें और शर-ई मसाइल मुला-ह़ज़ा कीजिये :

त़लाक़ से मु-तअ़ल्लिक़ मुफ़ीद म-दनी फूल

❀ सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ह़लाल चीज़ों में से **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक सब से ना पसन्दीदा चीज़ त़लाक़ है।"(1)

1... ابوداود، کتاب الطلاق، باب فی کراھیۃ الطلاق، ۲/۳۷۰، حدیث: ۲۱۷۸

www.dawateislami.net

❀ किसी मा'कूले शर-ई सबब के बिग़ैर त़लाक़ देना इस्लाम में सख़्त ना पसन्दीदा और ना जाइज़ व गुनाह है जब कि त़लाक़ के कसीर मुआ़-श-रती नुक़्सानात इस के इ़लावा हैं लिहाज़ा ह़त्तल इम्कान त़लाक़ देने से बचना चाहिये। ❀ मियां बीवी के दरमियान अगर नाचाक़ी हो जाए तो तअ़ल्लुक़ात दोबारा बेहतर बनाने के लिये क़ुरआने करीम के पारह नम्बर 5 **सू-रतुन्निसाअ** की आयत 33 और 34 में बयान कर्दा हिदायात पर अ़मल करते हुए आपस में सुल्ह़ की कोशिश करनी चाहिये जिस का त़रीक़ा येह है कि म-सलन अगर बीवी की त़रफ़ से कोई ना-रवा रवय्या है तो शोहर बीवी को अच्छे अन्दाज़ में समझाए और अगर इस से भी मुआ़-मला ह़ल न हो तो शोहर चन्द दिनों के लिये बीवी को घर में रखते हुए उस से अपना बिस्तर जुदा कर ले और मक़्सद येह हो कि त़लाक़ के नतीजे में गुज़ारी जाने वाली तन्हा ज़िन्दगी का एक नमूना सामने आ जाए, क़वी इम्कान है कि इस तसव्वुर ही से दोनों सबक़ ह़ासिल कर के आपस में सुल्ह़ कर लें ❀ फिर अगर यूं भी सुल्ह़ न हो सके तो शोहर को बीवी की मुनासिब सख़्ती के ज़रीए़ तादीब की भी इजाज़त है और येह त़रीक़ा इख़्तियार करना भी बहुत मुफ़ीद है कि दोनों जानिब से मुआ़-मला फ़ह्म और समझदार अफ़राद को ह़कम व मुन्सिफ़ (या'नी फ़ैसला करने वाला) बना लिया जाए ताकि वोह इन में सुल्ह़ करवा दें येह सुल्ह़ करवाने वाले अफ़राद अगर अच्छी निय्यत और जज़्बे के साथ ह़िक्मत भरे अन्दाज़ में सुल्ह़ की कोशिश करेंगे तो **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ज़ौजैन के माबैन इत्तिफ़ाक़ पैदा फ़रमा देगा। ❀ मियां बीवी के बाहमी झगड़े का ह़ल येह नहीं कि फ़ौरन त़लाक़ दे कर मुआ़-मले को ख़त्म कर दें

www.dawateislami.net

और बा'द में अफ़्सोस के सिवा कुछ हाथ न आए। अलबत्ता अगर बाहमी तअ़ल्लुक़ात की ख़राबी इस ह़द तक पहुंच गई हो कि मियां बीवी समझते हों कि अब वोह एक दूसरे के शर-ई ह़ुक़ूक़ अदा नहीं कर पाएंगे और त़लाक़ ही आख़िरी ह़ल है तो फिर शोहर इस्लाम के बताए हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ त़लाक़ दे। ❀ वोह त़रीक़ा येह है कि शोहर बीवी को उस की पाकी के उन दिनों में कि जिन में उस ने बीवी से इज़्दिवाजी तअ़ल्लुक़ात क़ाइम न किये हों एक त़लाक़े रज्ई इन अल्फ़ाज़ से दे दे **"मैं ने तुझे त़लाक़ दी"** फिर शोहर उसे छोड़ दे ह़त्ता कि इ़द्दत मुकम्मल हो जाए और औ़रत निकाह़ से बाहर हो जाए। ❀ याद रखें एक त़लाक़े रज्ई देने से भी इ़द्दत गुज़रने पर मर्द व औ़रत में जुदाई हो जाती है और येह समझना कि तीन त़लाक़ के बिग़ैर एक दूसरे से ख़लासी नहीं होती सरासर ग़लत़ है ❀ ख़ुद ज़बानी त़लाक़ देनी हो या ख़ुद लिखनी हो या इस्टाम पेपर वालों से लिखवानी हो, बहर ह़ाल एक ही लिखें और लिखवाएं, इस्टाम पेपर वाले हज़ार कहें कि तीन लिखने से कुछ नहीं होता, उन की बात का हरगिज़ ए'तिबार न करें और उन्हें एक ही लिखने पर मजबूर करें ❀ एक त़लाक़े रज्ई का बत़ौरे ख़ास इस लिये कहा गया है कि तीन त़लाक़ें इकठ्ठी देना गुनाह और ख़िलाफ़े शरीअ़त है नीज़ इस सूरत में रुजूअ़ की मोहलत भी ख़त्म हो जाती है जब कि एक त़लाक़े रज्ई देने की सूरत में दौराने इ़द्दत बिग़ैर निकाह़ के और बा'दे इ़द्दत निकाह़ के साथ रुजूअ़ की गुन्जाइश मौजूद होती है। अगर्चे रुजूअ़ की येह गुन्जाइश दो (2) रज्ई त़लाक़ें देने में भी है लेकिन दो त़लाक़ें इकठ्ठी देना भी गुनाह है। ❀ आज कल त़लाक़ देने वाले अक्सर लोग दीन से दूरी, शर-ई अह़काम से

www.dawateislami.net

ला इल्मी, गुस्से की आ़दत और जज़्बाती पन में मुब्तला हो कर मा'मूली सी बात पर एक साथ तीन त़लाक़ें दे बैठते हैं और फिर होश आने पर इन्तिहाई नादिम व पशेमान होते हैं, फिर कभी अपने माज़ी को याद करते हैं और कभी बच्चों के मुस्तक़्बिल को रोते हैं और बसा अवक़ात शैत़ान के बहकाने में आ कर घर बचाने के लिये मुख़्तलिफ़ ह़ीले बहाने तराशते हैं। याद रखें कि तीन त़लाक़ें इकठ्ठी देना गुनाह है लेकिन अगर कोई तीन त़लाक़ें दे तो तीनों ही वाक़ेअ़ हो जाती हैं ख़्वाह एक मजलिस में दे या ज़ियादा मजलिसों में और एक लफ़्ज़ से तीन त़लाक़ दे या तीन लफ़्ज़ों से, बहर सूरत तीनों त़लाक़ें हो जाती हैं लिहाज़ा मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही के पेशे नज़र येह मश्वरा पेशे ख़िदमत है कि अगर मियां बीवी के दरमियान बाहमी इत्तिफ़ाक़ की कोई सूरत न बन सके और त़लाक़ देने की कोई नौबत आ जाए तो इस्लामी हिदायत के मुत़ाबिक़ त़लाक़ दी जाए जिस का त़रीक़ा ऊपर बयान हो गया है और मज़ीद आसानी के लिये जुदागाना वज़ाह़त से दोबारा बयान किया जा रहा है।

त़लाक़ देने का सब से बेहतर त़रीक़ा

त़लाक़ देने का सब से बेहतर त़रीक़ा येह है कि औ़रत की पाकी के वोह अय्याम जिन में शोहर ने उस से सोह़बत न की हो, उन अय्याम में सिर्फ़ एक बार उस से कहे : **"मैं ने तुझे त़लाक़ दी"** इस के बा'द बीवी को छोड़े रखे और उस से बिल्कुल अ़ला-ह़दा रहे यहां तक कि उस की इ़द्दत गुज़र जाए। इख़्तितामे इ़द्दत पर वोह निकाह़ से ख़ारिज हो जाएगी। इस त़रह़ त़लाक़ देने से फ़ाएदा येह होगा कि कल को अगर दोनों दोबारा एक साथ

www.dawateislami.net

ज़िन्दगी बसर करना चाहें तो दौराने इद्दत बिग़ैर निकाह़ के और इद्दत के बा'द बिग़ैर ह़लाला सिर्फ़ निकाह़ के ज़रीए रुजूअ़ हो जाएगा। ❀ त़लाक़ का कोई भी मस्अला अपनी अट्कल (या'नी समझ) से ह़ल करने के बजाए दारुल इफ़्ता से रुजूअ़ कीजिये।

घर अम्न का गहवारा कैसे बने ?

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 6 जुल क़ा'दतिल ह़राम 1428 सि.हि., 17 दिसम्बर 2007 सि.ई. बरोज़ पीर शरीफ़ एक इस्लामी भाई और उन के बच्चों की अम्मी को घरेलू नाचाक़ी के इ़लाज के लिये नसीह़त के म-दनी फूल इ़नायत फ़रमाए (जिन में ज़रूरतन कहीं कहीं तरमीम की गई है)। इन म-दनी फूलों पर अ़मल कर के اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ घर को ह़क़ीक़ी मा'नों में अम्न का गहवारा बनाया जा सकता है आइये इन म-दनी फूलों को मुला-ह़ज़ा कीजिये :

शादी शुदा इस्लामी भाइयों के लिये 19 म-दनी फूल

1 इस में कोई शक नहीं कि शोहर अपनी ज़ौजा पर ह़ाकिम है ताहम इन्साफ़ से काम लेना ज़रूरी है कि ह़ाकिम से मुराद सियाह सफ़ेद का मालिक होना नहीं है।

2 औ़रत टेढ़ी पस्ली से पैदा की गई है, उस की नफ़्सिय्यात को परख कर उस के साथ बरताव कीजिये। अगर अपनी सोच के मे'यार पर उस को तोलेंगे तो घर चलना बहुत दुश्वार है।

www.dawateislami.net

3 औ़रत उ़मूमन नाक़िसुल अ़क़्ल होती है, 100 फ़ीसद आप के मे'यार पर पूरी उतरे येह तवक़्क़ोअ़ रखना बेकार है, लिहाज़ा उस की कोताहियों को नज़र अन्दाज़ कर के उस पर मज़ीद एह़सानात कीजिये ।

4 लाख ग़-लतियां करे, मुंह चढ़ाए, बड़-बड़ाए, अगर आप घर आबाद रखना चाहते हैं तो उस के साथ उस वक़्त तक नरमी से पेश आने का ज़ेह्न बनाते रहिये जब तक शरीअ़त सख़्ती की इजाज़त न दे ।

5 अगर औ़रत टेढ़ी चलती रही और आप सब्र करते रहे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अज्रो सवाब का आख़िरत में अम्बार देखेंगे । दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : कामिल ईमान वालों में से वोह भी है जो उ़म्दा अख़्लाक़ वाला और अपनी ज़ौजा के साथ सब से ज़ियादा नर्म त़बीअ़त वाला है ।[1]

6 अगर बीवी आप के मन पसन्द खाने नहीं पका पाती तो सब्र कीजिये । मह़ज़ नफ़्स की मा'मूली लज़्ज़त की ख़ातिर बिला इजाज़ते शर-ई उस को डांट डपट करना, मारधाड़ पर उतर आना बरबादिये आख़िरत का बाइ़स बन सकता है ।

7 जिस त़रह़ आ़म मुसल्मानों की दिल आज़ारी ह़राम है उसी त़रह़ बिला मस्लह़ते शर-ई बीवी की दिल आज़ारी में भी जहन्नम की ह़क़दारी है ।

8 अगर कभी ग़ुस्सा आ जाए और ज़ौजा पर नाह़क़ ज़बान चल जाए या बिला मस्लह़ते शर-ई हाथ उठ जाए तो तौबा भी वाजिब और तलाफ़ी भी लाज़िम । शरमाने और अपनी कस्रे

1... ترمذی، کتاب الرضاع، باب ماجاء فی حق الزوج...الخ، ۲/ ۳۸۶، حدیث ۱۱۶۵

www.dawateislami.net

शान समझने के बजाए निहायत लजाजत व नदामत के साथ इस त़रह़ उस से मा'ज़िरत कीजिये कि उस का दिल साफ़ हो जाए और वोह वाक़ेई मुआ़फ़ कर दे। रस्मी त़ौर पर SORRY बोल देना काफ़ी न होगा और न ही इस त़रह़ ह़क़्क़ुल अ़ब्द से यक़ीनी ख़लासी होगी। जैसा जुर्म वैसी मुआ़फ़ी तलाफ़ी।

9 कभी आप की पुकार पर जवाब न मिले तो बे तह़ाशा बरस पड़ना सिफ़्ला पन (कमज़र्फ़ी) है, हुस्ने ज़न से काम लीजिये कि बेचारी ने सुना न होगा या कोई और मजबूरी मानेअ़ हुई होगी।

10 कभी कपड़े की इस्तरी न हुई, खाने में नमक मिर्च कमो बेश हुवा, ताज़ा खाना पका कर न दिया, दूसरे दिन का गर्म कर के या ठन्डा ही रख दिया, बरतन बराबर न धुल पाए तो जारिह़ाना अन्दाज़ से हुक्म चलाने और डांट पिलाने के बजाए नरमी से तफ़्हीम (या'नी समझाना), इज़्दियादे हुब (या'नी मह़ब्बत में इज़ाफ़े) का बाइ़स होगी। नफ़्सो शैत़ान की चालों को समझने की कोशिश कीजिये, नफ़रतें मत बढ़ाइये।

11 ज़बान से बताने में ग़ुस्सा आ जाता हो और बात बिगड़ जाती हो तो अगर फ़रीक़ैन ऐसे मौक़अ़ पर एक दूसरे को तह़रीरी त़ौर पर समझाने का मा'मूल बनाएं तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ झगड़े की नौबत नहीं आएगी।

12 होटल या बाज़ार की ग़िज़ा की मानिन्द लज़ीज़ अग़्ज़िया (ग़िज़ाएं) बनाने का ज़ौजा से बिलजब्र मुत़ा-लबा करना नफ़्स की पैरवी और उस के न बनाने पर त़न्ज़ो मिज़ाह़, त़ा'नो तश्नीअ़ और ज़बर दस्ती की दिल आज़ारी करना शैत़ान की ख़ुशी का सामान है।

13 अपनी वालिदा वग़ैरा की शिकायत पर बिग़ैर शर-ई सुबूत के

www.dawateislami.net

ज़ौजा को झाड़ना या मारना वग़ैरा ज़ुल्म है और ज़ालिम जहन्नम का हक़दार। ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ज़ुल्म जहन्नम में ले जाने वाला है।(1)

14 अपना काम अपने हाथ से करना बाइ़से सआ़दत और अ़ज़ीम सुन्नत है। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने कपड़े ख़ुद सी लेते और अपने ना'लैने मुबा-रकैन गांठते और वोह सारे काम करते जो मर्द अपने घरों में करते हैं।(2)

15 छोटी छोटी बातों पर बीवी को हुक्म देना म-सलन येह उठा दो, वोह रख दो, फ़ुलां चीज़ ढूंड कर ला दो वग़ैरा से बचना और अपना काम अपने हाथ से कर लिया करना घर को अम्न का गहवारा बनाने में मदद देता है।

16 अपने छोटे छोटे कामों के लिये बीवी को नींद से जगा देना, कामकाज और झाड़पोंछ के दौरान, आटा गूंधते हुए, नीज़ दर्दे सर, नज़्ला या दीगर बीमारियों के होते हुए उन को काम के ऑर्डर दिये जाना घर के माह़ोल को ख़राब कर सकता है। जिस त़रह़ आप को नींद प्यारी है, सुस्ती होती है, मूड ऑफ़ होता है इसी त़रह़ के अ़वारिज़ औ़रत को भी दरपेश होते हैं बल्कि मर्द के मुक़ाबले में औ़रत को नींद ज़ियादा आती है नीज़ उस को भी ग़ुस्सा आ सकता है लिहाज़ा मिज़ाज शनासी की आ़दत डालिये।

17 फ़रीक़ैन में से अगर एक को ग़ुस्सा आ जाए तो दूसरे का

1...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الحیاء، ۳/۴۰۶، حدیث: ۲۰۱۶

2...کنز العمال، کتاب الشمائل، قسم الاقوال، الجزء السابع، ۴/۶۰، حدیث: ۱۸۵۱۴

www.dawateislami.net

ख़ामोश रहना बहुत ज़रूरी है कि गुस्से का गुस्से से इज़ाला बसा अवक़ात ख़तरनाक साबित होता है।

18 बावर्ची ख़ाने में मसरूफ़िय्यत के दौरान बीवी को इस तरह तन्क़ीद का निशाना बनाना कि आलू तराशना नहीं आता, टमाटर काटने का ढंग नहीं, अदरक क्या इस तरह काटते हैं ? वग़ैरा वग़ैरा बहुत ही तक्लीफ़ देह और बाइसे नफ़रत होता है। अक़्ल मन्द वोही है जो बीवी की जाइज़ तौर पर हौसला अफ़्ज़ाई करता रहे और अपना काम निकालता रहे।

19 मियां बीवी का बच्चों के सामने लड़ना झगड़ना उन के अख़्लाक़ के लिये भी तबाह कुन है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तरफ़ से अता कर्दा येह म-दनी फूल निहायत अहम्मिय्यत के हामिल हैं जिन पर अमल कर के शोहर घर को अम्न का गहवारा बना सकता है। इलावा अज़ीं अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सुन्नतों भरे बयानात भी घर में म-दनी माहोल क़ाइम करने और लड़ाई झगड़ों को जड़ से उखाड़ने में निहायत मुफ़ीद व मुआविन हैं आइये इस ज़िम्न में एक म-दनी बहार मुला-हज़ा कीजिये :

सास बहू में सुल्ह का राज़

बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि तवील अर्से से मेरी ज़ौजा और वालिदा या'नी सास बहू में ख़ूब ठनी हुई थी। जिस का नतीजा येह निकला कि ज़ौजा रूठ कर मयके जा बैठी। मैं सख़्त परेशान था और समझ में नहीं

www.dawateislami.net

आता था कि इस मस्अले को कैसे ह़ल करूं। इतने में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के म-दनी मुज़ा-करे की VCD "घर अम्न का गहवारा कैसे बने ?" मेरे हाथ आई। मौज़ूअ़ देखा तो बड़ी उम्मीद के साथ येह VCD ख़ुद भी देखी और अपनी वालिदए मोह़-त-रमा को भी दिखाई और एक VCD अपने सुसराल भी भेज दी। मेरी वालिदा को येह VCD इतनी पसन्द आई कि उन्हों ने इसे दो बार देखा और ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मुझ से फ़रमाने लगीं : चल बेटा ! तेरे सुसराल चलते हैं। मैं ने सुकून का सांस लिया कि लगता है जो काम मैं भरपूर इन्फ़िरादी कोशिश के बा वुजूद न कर सका मेरे पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मीठे मीठे अन्दाज़े गुफ़्त-गू ने कर दिया है।

मेरे सुसराल पहुंच कर वालिदा साह़िबा ने बड़ी मह़ब्बत से मेरी ज़ौजा को मनाया और उसे वापस घर ले आईं। दूसरी जानिब मेरी ज़ौजा ने भी मुस्बत त़र्ज़े अ़मल का मुज़ा-हरा किया और घर पहुंचने के बा'द दूसरे ही दिन अपनी सास से कहने लगीं : अम्मीजान ! मेरा कमरा बहुत बड़ा है, जब कि दीगर घर वाले जिस कमरे में रहते हैं वोह क़दरे छोटा है, आप मेरा कमरा ले लीजिये और मैं उस छोटे कमरे में रिहाइश इख़्तियार कर लेती हूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारा घर जो फ़ितने और फ़साद का शिकार था, VCD "घर अम्न का गहवारा कैसे बने ?" की ब-र-कत से अम्न का गहवारा बन गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ता ह़यात दा'वते इस्लामी से वाबस्ता रखे नीज़ क़ुरआनो सुन्नत की पाबन्दी और अपने घर वालों के साथ हुस्ने सुलूक करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

***	قرآن پاک	کلام باری تعالیٰ	***
نمبر شمار	کتاب	مصنف / مؤلف / متوفی	مطبوعہ
1	ترجمہ کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
2	التفسیر الکبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ
3	الدر المنثور	امام جلال الدین بن ابو بکر سیوطی شافعی متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ
4	تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ، لاہور
5	خزائن العرفان	صدر الافاضل سید نعیم الدین مراد آبادی متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
6	تفسیر قرطبی	ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
7	صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
8	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم ۱۴۱۹ھ
9	سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
10	سنن ابی داود	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
11	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
12	المسند	امام ابو عبد اللہ احمد بن محمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
13	المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
14	شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
15	فردوس الاخبار	حافظ ابو شجاع شیرویہ بن شہر دار دیلمی متوفی ۵۰۹ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ

www.dawateislami.net

16	تاریخ ابن عساکر	امام علی بن حسن المعروف ابن عساکر متوفی ۵۷۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵
17	الترغیب والترھیب	امام زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی منذری متوفی ۶۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
18	کتاب الکبائر	امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی متوفی ۷۴۸ھ	پشاور پاکستان
19	مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ہیثمی متوفی ۸۰۷ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
20	الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابو بکر سیوطی شافعی متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۵ھ
21	کنز العمال	علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
22	مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز
23	فتاوی قاضی خان	امام حسن بن منصور قاضی خان ۵۹۲ھ	مکتبہ حقانیہ، پشاور
24	فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور ۱۴۲۳ھ
25	بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ
26	احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر، بیروت ۲۰۰۰ء
27	تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی متوفی ۳۷۳ھ	دار الکتاب العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
28	تذکرۃ الاولیاء	شیخ فرید الدین عطار متوفی ۶۳۷ھ	شبیر برادرز، لاہور
29	ظلم کا انجام	امیر اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم	مکتبۃ المدینہ، کراچی
30	باحیاء نوجوان	امیر اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم	مکتبۃ المدینہ، کراچی
31	بیاناتِ عطاریہ (حصہ دوم)	امیر اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم	مکتبۃ المدینہ، کراچی
32	تذکرۂ امیر اہلسنّت (حصہ سوم)	المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ، کراچی

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	सब से ज़ियादा अज्र वाला दीनार	20
शोहर पर बीवी के एह़सानात	1	मीज़ान में रखी जाने वाली पहली चीज़	20
घर की ख़ुशह़ाली में शोहर का किरदार	4	निज़ामे फ़ित्रत बदलने का अन्जाम	21
बीवी के ह़ुक़ूक़ की अहम्मिय्यत	5	नेकी का ह़ुक्म दीजिये	23
नज़ाफ़त का ख़ुसूसी एहतिमाम	6	दय्यूस किसे कहते हैं ?	24
बीवी से ह़ुस्ने सुलूक के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रामीन	7	घर का अफ़्सर	25
बे ऐ़ब बीवी मिलना ना मुम्किन है	8	बीवी को किन सूरतों में मार सकता है ?	29
लम्ह़ए फ़िक्रिय्या	9	बीवी को न मारना अफ़्ज़ल है	30
बीवी की ख़त़ा मुआ़फ़ करने का इन्आ़म	11	ज़ालिम का अन्जाम	32
		ईज़ा का बदला	32
सब्रे अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام की मिस्ल सवाब	12	ज़ुल्म की मुआ़फ़ी मांग लो	33
बद अख़्लाक़ बीवी और साबिर शोहर	12	अगर इख़्तिलाफ़ बढ़ जाए तो क्या करे ?	35
आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उस्वए ह़-सना	13	त़लाक़ से मु-तअ़ल्लिक़ मुफ़ीद म-दनी फूल	35
घरेलू काम करना सुन्नत है	15	त़लाक़ देने का सब से बेहतर त़रीक़ा	38
घर में बच्चे और क़ौम में मर्द बन कर रहो	17	घर अम्न का गहवारा कैसे बने ?	39
		शादी शुदा अफ़्राद के लिये 19 म-दनी फूल	39
शोहर पर औ़रत के ह़ुक़ूक़	18		
नान नफ़क़ा वाजिब है	18	सास बहू में सुल्ह़ का राज़	43
जितना ख़र्च उतना ही अज्र	19	मआख़िज़ो मराजेअ़	45

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुम्आ़रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN 0133044

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, ग्री कोलिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-१, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net